पाठक- पंचायत

गुनहगारों को पकडवाने में पीछे न हटें

दिल्ली एक विकसित शहर और भारत की राजधानी होने के बावजूद भी सुरक्षित नही है। यहां हर रोज किसी न किसी महिला के साथ छेडखानी के मामले सामने आते है। ऐसा ही उत्तर पूर्वी दिल्ली के सीलमपुर से गौतमपुरी पुलिया ब्रम्हपुरी मेन रोड घोंडा चौक छेडखानी दिन प्रतिदिन बढती जा रही है। कुछ लडके बाइक पर सवार गली के नुक्कड पर चाय के स्टॉल पर सीटी बजाते हुए तथा कमेंट पास करते हुए भी देखे गए है। हालांकि पुलिस ने इस मामले में कुछ लडकों को अपनी गिरफ्त में लिया है लेकिन इसमें पुलिस को सामाजिक मदद की भी जरूरत है। क्योंकि जब तक कोई महिला खुद ही कुछ नहीं बोलेगी तो पुलिस इस पर कोई कार्रवाई नही कर पाएगी। जुर्म करने वाले से बडा जुर्म सहने वाला होता है। कई बार हम गुनहगार को पकडवाने में अपने कदम पीछे कर लेते है। जिससे उन्हें और भी बढावा मिल जाता है। -मीनू , दिल्ली

अब तो सडकों पर जाम में फंसना आम बात

सडकों पर ट्रैफिक जाम की समस्या आम जिंदगी का हिस्सा बन गई है। दिल्ली के सीमापुरी रेड लाइट पर रोजाना जाम लगना लोगों के लिए अब एक साधारण बात है। जिन जगहों पर रेड लाइट नही होती वहां जाम लगने को पूरे आसार होते है साथ ही जहां होती है वहां भी घंटों का जाम लगने की समस्या देखी जाती है। जिसके लिए आम जनता ही जिम्मेदार है। ई रिक्शा चालकों की वजह से सबसे ज्यादा जाम लगता है। वह अपना रिक्शा छोटा समझकर कहीं से भी निकालने की सोचते है। इनक लिए न तो कोई रेड लाइट है न कोई यातायात नियम। ऐसे में लडाई होना तथा वाहनों को नुकसान पहुंचाना मामुली सी बात है। इस स्थिति को काबू करने तथा जाम खुलवाने के लिए यातायात पुलिसकर्मी नहीं पहुंचते कारणवश लोग कई घंटे जाम में फंसे रहते है। ऐसे में लोगों तथा यातायात पुलिसकर्मियो को जिम्मेदारी समझनी चाहिए। -उर्वशी दुबे, गाजियाबाद

ऑन द राइज पुस्तक का विमोचन

नई दिल्ली (वि.)। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस ए के सीकरी ने इंडियन ला इंस्टीटयूट के सभागार में वरिष्ठ वकील तारिक खां की पुस्तक आन द राइज का विमोचन किया। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय वित्तमंत्री पी चिदंबरम एवं वरिष्ठ एडवोकेट फली एस नरीमन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस पुस्तक में कानूनी जानकारियां कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों पर चर्चा के साथ कई शोध परक लेख भी शामिल है। विमोचन समारोह में सुप्रीम कोर्ट हाई कोर्ट के जजों वकीलों राजनीतिज्ञों सहित दो सौ से भी अधिक लोग उपस्थित थे। लेखक तारिक खां ने सभी का आभार व्यक्त किया। दोनो महानुभावों ने पुस्तक के लिए लेखक को हार्दिक बधाई दी और सराहना की।

प्रकृति के बीच मना स्थापना दिवस

नई दिल्ली (वि.)। जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज ने पर्यावरण को संतुलित रखने का संदेश देते हुए अपना स्थापना दिवस मनायाण् कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ स्वाति पॉल ने कहा कि हर कॉलेज में पढ़ाई होती हैण् हम अपने बच्चों को किताब के संग व्यवहारिक बातें भी सिखाते हैंण् इसकी मिसाल है अवनिण् पर्यावरण को बचाने के लिए और लोगोंण् को जागरूक करने के लिए हम लगातार काम कर रहे हैं स्थापना दिवस समारोह में सांसद मीनाक्षी लेखी ने कॉलेज की पर्यावरण को लेकर किए जा रहे कामों प्रशंसा कीण् सुलभ इंटरनेशनल के पद्मश्री बिंदेश्वर पाठक ने प्रिंसिपल डॉ स्वाति पॉल का उत्साहवर्द्धन कियाण् इस अवसर पर कॉलेज के विद्यार्थियों ने कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

आपका राशिफल

मेष -आज का दिन मिश्रित फलदायी है। गणेशजी आज आपको वाणी और व्यवहार में संयम रखने की एवं रागद्वेष से दूर रहने की सलाह देते हैं।

वृषभ -गणेशजी कहते है कि आज का दिन शुभफलदायी है। आज आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेगें। मानसिक प्रसन्नता का अनुभव होगा।

मिथुन - आज आपका दिन बहुत अच्छा बीतेगा, ऐसा गणेशजी कहते हैं। घर में शांति और आनंद का वातावरण रहेगा। सुखमय प्रसंग बनेंगे।

कर्क - गणेशजी कहते हैं कि आज का दिन आपके लिए थोड़ी सावधानी रखने का है। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

सिंह - दिन शुभ फलदायी नहीं है। घर में वाद-संवाद का वातावरण रहेगा। परिवारजनों के साथ ऐसी घटना हो सकती है जिससे आपके दिल को तकलीफ हो सकती है।

कन्या - आज आपको किसी भी कार्य में बिना सोचे-समझे हिस्सा लेने से गणेशजी मना करते हैं। साथियों के साथ अच्छी तरह से समय बीतेगा।

तुला - गणेशजी कहते है कि आज आपका मन दुविधाओं में उलझा रहेगा। निर्णय न ले पाने के परिणाम स्वरूप नए कार्यों का प्रारंभ करना आपके लिए हितकर नहीं है।

वृश्चिक- गणेशजी कहते हैं कि आज का दिन सामान्य तरीके से बीतेगा। तन और मन प्रसन्नता रहेगी तथा सुख एवं आनंद की प्राप्ति होगी।

धनु - आज का दिन कुछ कष्टदायक होने से थोड़ा संभलकर चलने की गणेशजी सलाह देते हैं। परिवारजनों के साथ मनमुटाव के प्रसंग उपस्थित होंगे।

मकर- गणेशजी कहते हैं कि सामाजिक कार्यों से आपको लाभ होगा क्योंकि विविध क्षेत्रों से लाभ होने के आज के योग हैं।

कुंभ - आज आपकी शारीरिक और मानसिक स्थति अच्छी रहेगी। व्यवसायिक क्षेत्र में आपके कार्य की प्रशंसा होगी। जो कि आपके लिए आनंददायी रहेगी।

मीन - आज उच्च अधिकारी के साथ सम्बंधों में दरार न पड़े इसका ध्यान रखने के लिए गणेशजी सलाह देते हैं। शारीरिक शिथिलता और मानसिक चिंता बनी रहेगी।

जीने के लिए जीते-जी मरना सीखो

नई दिल्ली (वि.)। ध्यान का उद्देष्य अन्तर्मुख होना है। अन्तर्मुख होने का अर्थ है, आत्मिक आनन्द की अवस्था में होना। तब हम प्रभु के साथ और समस्त सृष्टि के साथ अपनी आत्मा की एकता को पहचानते हैं। हमें यकीन हो जाता है कि हमारी आत्मा अजर अमर है। अर्न्तमुख होने से हम उस दिव्य स्रोत से जुड़ जाते हैं जो समस्त ज्ञान का भण्डार है। ध्यान-अभ्यास द्वारा हम मृत्यु के द्वार को लाँघकर, उस आनन्द और सौन्दर्य को पा लेते हैं जो हमारे भीतर हमारा इंतजार कर रहा है। उस अवस्था को पाकर हमें मृत्यु की तलवार का डर नहीं सताता क्योंकि हम जीते-जी उस स्थान को देख लेते हैं जहाँ मृत्यु के बाद हमें जाना है। तब हमें ईसा मसीह के इस वचन का सही अर्थ मालूम होता है, हां, मैं मृत्यु की वादी में चहलकदमी करता हूँ परन्तु मैं भयभीत नहीं हूँ क्योंकि तुम मेरे साथ हो। संतों-महात्माओं ने, जिन्होंने पारलौकिक जीवन को देखा है, अपनी वाणी में मृत्यु के बारे में वर्णन किया है। वे कहते हैं कि यह ऐसा कुछ नहीं जिससे कि हम भयभीत हों बल्कि उसका तो स्वागत किया जाना चाहिए। कबीर साहब ने कहा है, जिस मरने से जग डरे, मेरे मन आनन्द, मरने ही ते पाइये पूरन परमानन्द सेन्ट टेरेसा ने कहा है, मैं नहीं मरती, मैं तो जीवन में प्रवेष करती हूँ। इस धरती पर जिसे हम जीवन कहते हैं, जाग्रत महापुरुषों के लिए यह एक निद्रा है; मृत्यु द्वारा प्रभु के राज्य में प्रवेष करना, जागना है। सेन्ट पॉल ने कहा है, ओ मृत्यु! तुम्हारा दंष कहाँ है? ऐ कब्र! तुम्हारी जीत कहाँ है? हम जीते-जी इसी जीवन में उस जगह को देख सकते हैं जो इस जीवन के बाद हमारे लिए तैयार की गई है। अन्तर में प्रवेष करके जब हम यह अनुभव पा लेते हैं तो आत्मा का अजर-अमरता होना हमारे लिए कोई सुनी-सुनाई बात नहीं रह जाती बल्कि एक ठोस विष्वास, एक अनुभूति बन जाती है। अनेक तरह के डर ऐसे होते हैं जिनके पीछे कुछ खोने का, दुःख का या मृत्यु का डर होता है। एक बार आत्मा के अमर होने का अनुभव होने के बाद हमारा भय समाप्त होने लगता है। प्रभु से एकता की अवस्था में हमारी आत्मा किसी भय को नहीं जानती। उस एकता के ज्ञान का अभाव ही, भय का कारण होता है। वास्तव में, सच्चाई से दूर होना ही पाप है। पाप का अर्थ है - प्रभु से अंजान रहना और सत्य व प्रेम के उस नियम से अंजान रहना जो कि समस्त ब्रह्माण्डों को संचालित करता है। यह एकदम आसान सूत्र है: गुण वही है जो हमें परमात्मा के नजदीक लाए जो हमें प्रभु से दूर ले जाए, वह पाप है। यदि हम सच्चाई के रास्ते पर चलते हैं, अहिंसा, सच्चाई, पवित्रता, नम्रता और निष्काम सेवा जैसे गुण अपने जीवन में ढालते हैं और साथ ही साथ ध्यान-अभ्यास में नियम से समय देते हैं तो हमें इस दुनिया में और उसके बाद की दुनिया में किसी बात का भय नहीं रहता। जब हम अपनी आत्मा के सच्चे स्वरूप से विमुख रहते हैं तो हम अलग-थलग और अकेले महसूस करते हैं परन्तु जब हम अपनी आत्मा को सफल बनाते हैं, हम कभी अकेले नहीं होते। हम सदैव परमात्मा से और उसकी सृष्टि से एकता का अनुभव करते हैं। हमें अहसास होता है कि हमारे साथ हर समय एक दिव्य सत्ता रहता है। जब हम देखते हैं कि जो प्रकाष हमारी आत्मा में है वही दूसरी आत्माओं में भी है, तो हम सृष्टि के हर जीव को अपना समझते हैं। एकता को इतने स्पष्ट रूप में देखकर हम अनुभव करते हैं कि सभी प्राणी एक ही परिवार के सदस्य हैं और दूसरों से मिलकर हमें मिलन की खुषी का एहसास होता है। तब पारिवारिक खुषी के स्थान पर हम सम्पूर्ण मानवता की खुषी देखते हैं। हमारे प्रत्येक व्यवहार में प्रेम का समावेष रहता है क्योंकि हम अपने सार्वभौमिक परिवार और मित्रों के बीच होते हैं। अन्तर की यात्रा द्वारा हम इस अवस्था को पा सकते हैं जहाँ सारी सृष्टि हमारा परिवार बन जाती है और सारी दुनिया हमारा घर।